Literacy for a Billion

Movie: Baharon Ki Manzil (1968)
Year: 1968

Song: Nigahein Kyun Bhatkati Hai
Lyricist: Majrooh Sultanpuri

ओ...
निगाहें क्यूँ भटकती हैं
कदम क्यूँ डगमगाते हैं
निगाहें क्यूँ भटकती हैं
कदम क्यूँ डगमगाते हैं
हमी तक है
हर इक मंज़िल
चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ

निगाहें क्यूँ भटकती हैं
कदम क्यूँ डगमगाते हैं
निगाहें क्यूँ भटकती हैं
कदम क्यूँ डगमगाते हैं
हमी तक है
हर इक मंज़िल
चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ
निगाहें क्यूँ भटकती हैं

तुम अपने हर कदम का सिलसिला
इस दिल से पाओगे
तुम अपने हर कदम का सिलसिला
इस दिल से पाओगे
कहीं जाओ मगर
मेरी ही जानिब चल के आओगे
आ...
ठहर जाने से क्या हासिल
चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ

निगाहें क्यूँ भटकती हैं
आ...
तुम्हें हर मोड़ पर
इक याद आईना दिखायेगी
तुम्हें हर मोड़ पर
इक याद आईना दिखायेगी
खयालों में हमारी ही
कोई तस्वीर आयेगी
हाँ भुलाना है बहुत मुश्किल
चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ
निगाहें क्यूँ भटकती हैं

ये कैसा दर्द है
आँखों में कैसी सोगवारी है
ये कैसा दर्द है
आँखों में कैसी सोगवारी है
जुनूँ जाएगा इक दिन यही जो बेकरारी है
हाँ ये चाहत है बड़ी कातिल

चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ
निगाहें क्यूँ भटकती हैं
कदम क्यूँ डगमगाते हैं
हमी तक है हर इक मंजिल
चले आओ
चले आओ
चले आओ
चले आओ

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.